9):~ चार्वाक के आत्मा तथा ईश्वर सम्बन्धित विचारों का आलोचनात्मक विवरण दीजिए।

):~ भारत का प्रायः प्रत्येक दार्शनिक आत्मा की सत्ता में विश्वास करता है। आत्मा भारतीय दर्शन का मुख्य अंग रहा है। परन्तु चार्वाक दर्शन के इस सम्बन्ध में एक अपवाद है। प्रत्यक्ष को ज्ञान का एकमात्र साधन मानने से वह उन्हीं वस्तुओं का अस्तित्व मानता है। जिनका प्रत्यक्षीकरण होता है। आत्मा का प्रत्यक्ष नहीं होता है। अतः आत्मा का अस्तित्व नहीं है।

भारतीय दर्शन में आत्मा के सम्बन्ध में विभिन्न धारणाएँ दिखाई पड़ती है। कुछ दार्शनिकों ने चैतन्य आत्मा का मूल लक्षण माना है तो कुछ ने चैतन्य को आत्मा का आगन्तुक लक्षण कहा है। जिन लोगों ने चैतन्य को आत्मा का मूल लक्षण कहा है। इन लोगों ने माना है कि आत्मा स्वभावतः चेतन है। जिन लोगों ने चेतना को आत्मा का आगन्तुक लक्षण कहा है उन लोगों के अनुसार आत्मा स्वभावतः चेतना नहीं है। चेतना का संचार आत्मा से विशेष परिस्थितियों में होता है अर्थात जब आत्मा का सम्बन्ध मन इन्द्रिय और शरीर से होता है। विशेष चार्वाक चैतन्य को यथार्थ मानता है क्योंकि चैतन्य का ज्ञान प्रत्यक्ष से प्राप्त होता है।

व्यवहारिक जीवन में आत्मा और शरीर की अभिन्नता मनुष्य भिन्न-2 उक्तियों से प्रमाणित करता है। मैं मोटा हूं, मैं पतला हूँ, मैं काला हूं आदि उक्तियों से आत्मा और शरीर की एकता परिलक्षित होती है।

आत्मा शरीर से भिन्न नहीं है यदि आत्मा शरीर की अभिन्नता है यदि आत्मा शरीर से भिन्न होती तो मृत्यु के उपरान्त आत्मा का शरीर से पृथक् हत रुप दीख पड़ता है। जन्म के पूर्व और मृत्यु के पश्चात् आत्मा का अस्तित्व मानना निराधार है जन्म के

पश्चात चेतना का आविर्भाव होता है और मृत्यु के पश्चात ही उसका अन्त हो जाता है। चेतना का आधार शरीर है।

चार्वाक ईश्वर-विचार का मूल उद्देश्य ईश्वर-विषयक विचार का खण्डन करना है। इस दर्शन का ईश्वरात्मक रूप ईश्वर विचार के खण्डन से अभिव्यक्त हुआ है। ईश्वर की सिद्धि करने के लिए जितने भी तर्क दिये गये उनका खण्डन करते हुए वह ईश्वर का विरोध करता है। ईश्वर का ज्ञान प्रत्यक्ष के द्वारा नहीं होता है ईश्वर का न कोई रूप है और न कोई आकार ही है इसलिए विहीन होने के कारण वह प्रत्यक्ष की सीमा के बाहर है। प्रत्यक्ष की सीमा से बाहर होने के कारण ईश्वर का अस्तित्व नहीं है, क्योंकि प्रत्यक्ष ही ज्ञान का एक मात्र साधन है ईश्वर की सत्ता नहीं है।

चार्वाक इस तर्क का विरोध करता है क्योंकि यह एक प्रकार का अनुमान है अनुमान अप्रमाणित है इसलिए अनुमान पर आधारित ईश्वर का ज्ञान भी अयथार्थ है।